Diamond

SCHOOL BASED ACTIVITIES

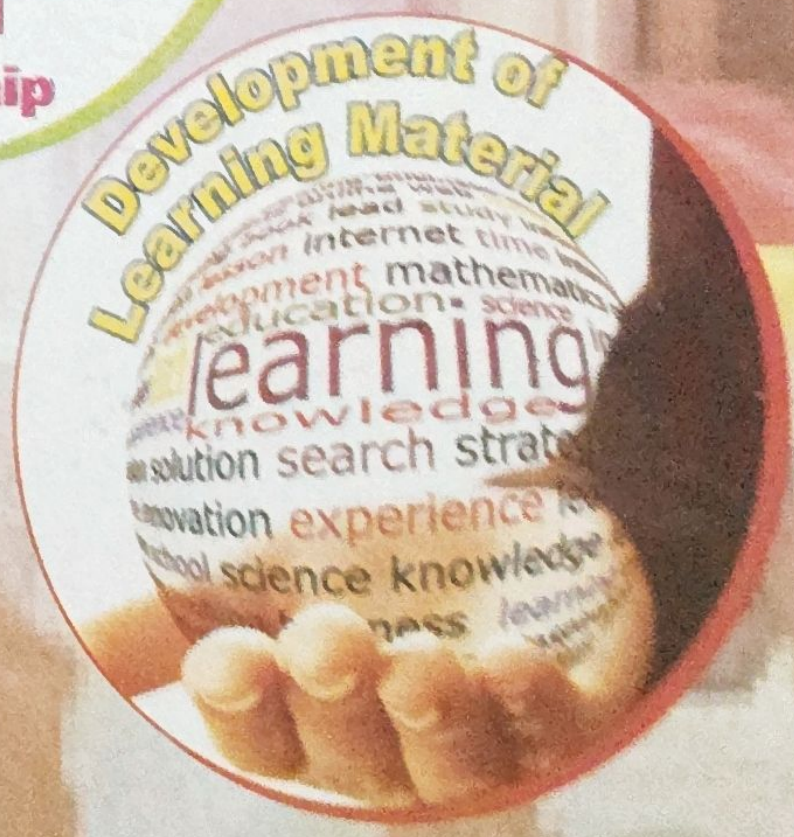

B.Ed. Practical Notebook

INDEX

NAME Harsh Mehra STD B.Ed (IInd Yr.) Roll No 181211103058

Sr. No.	Date	Topic	Page No.	Teacher's Sign. Remarks
1.		स्कूल का विवरण	1.	
2.		स्कूल की आधारिक संरचना का विवरण	2.	
3.		सुबह की सभा	3.	
4.		मिड - डे - मील	4.	
5.		समय - सारणी	5. - 6.	
6.		अध्यापक - विद्यार्थी संबंध	7.	
7.		विद्यार्थी - विद्यार्थी संबंध	8.	
8.		स्टाफ रूम	9.	
9.		प्रशिक्षण शिक्षक होने का अनुभव	10.	
10.		विद्यालय का वातावरण	11.-12.	
11.		सतत् और व्यापक मूल्यांकन	13-16.	
12.		मूल्यांकन	17-19.	

checked by

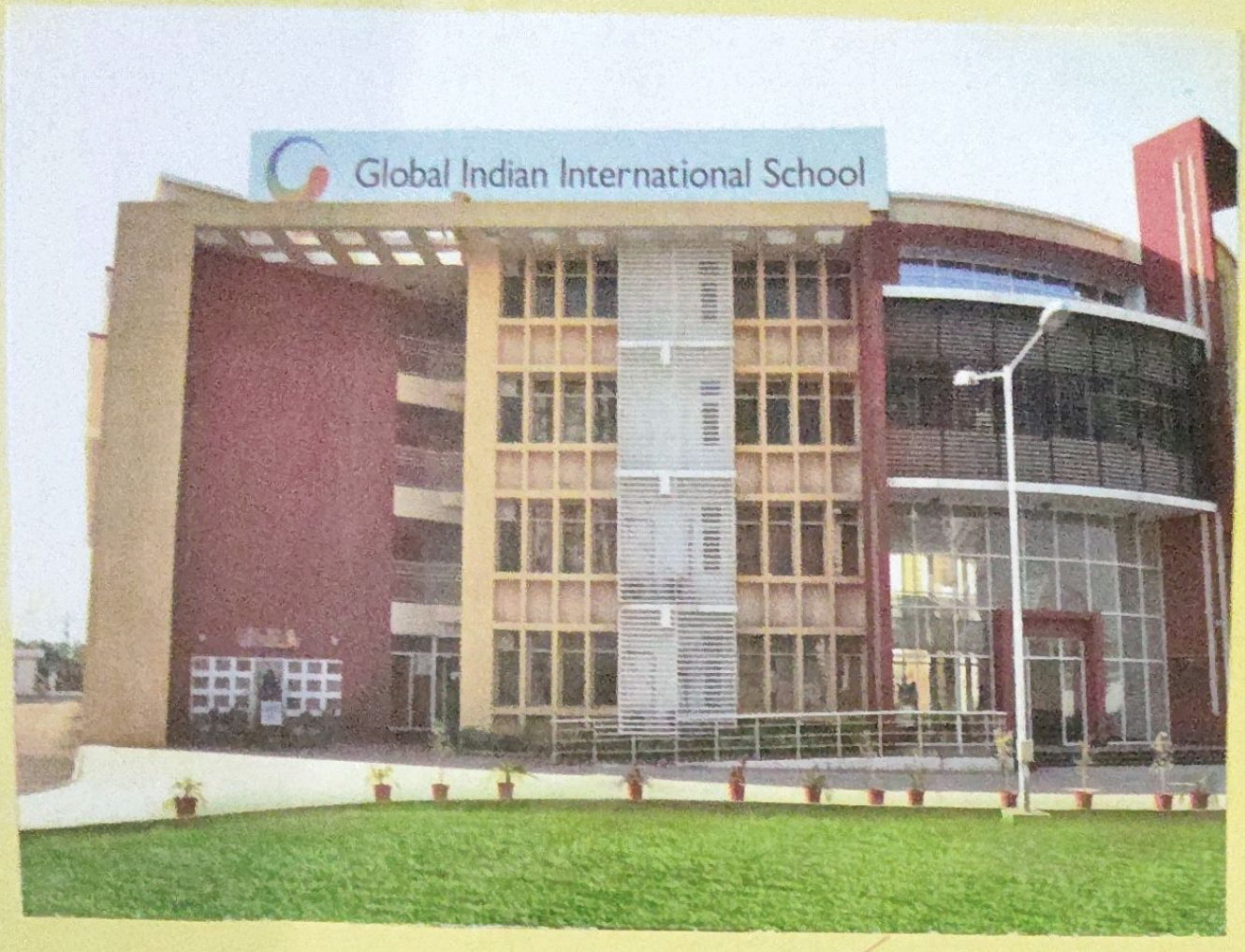
Global Indian International School

RENEWABLE SOURCES OF ENERGY
Sun, Wind and Water

स्कूल का विवरण :-

मैंने शहीद जीतराम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नाहड़ में 16 सप्ताह की इंटरशिप पूरी की है। इस विद्यालय के प्रधानाचार्य बहुत अच्छे थे जिनके मार्गदर्शन से मेरी इंटरशिप पूरी हुई। इस इंटरशिप के दौरान मैंने काफी कुछ सीखा। इंटरशिप के दौरान मुझे सभी अध्यापकों से हर संभव सहायता मिली। मैंने अपनी इंटरशिप मेरे निरीक्षण महोदय श्री कृष्ण कुमार भारद्वाज, गणित तथा विज्ञान अध्यापक की देखरेख में पूरी की।

विद्यालय के सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों का व्यवहार काफी सहयोगी था। इस स्कूल का माहौल अच्छा था। यहाँ से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला। विद्यालय में सुबह से शाम तक बच्चों को पढ़ाया जाता था। विद्यालय में बच्चों को डिजिटल माध्यम से भी पढ़ाया जाता था।

सामान्य जानकारियाँ :->

विद्यालय :- शहीद जीतराम राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नाहड़ (रेवाड़ी) 2548

माध्यम :- हिंदी और अंग्रेजी।

कक्षा :- छठी से बारहवीं।

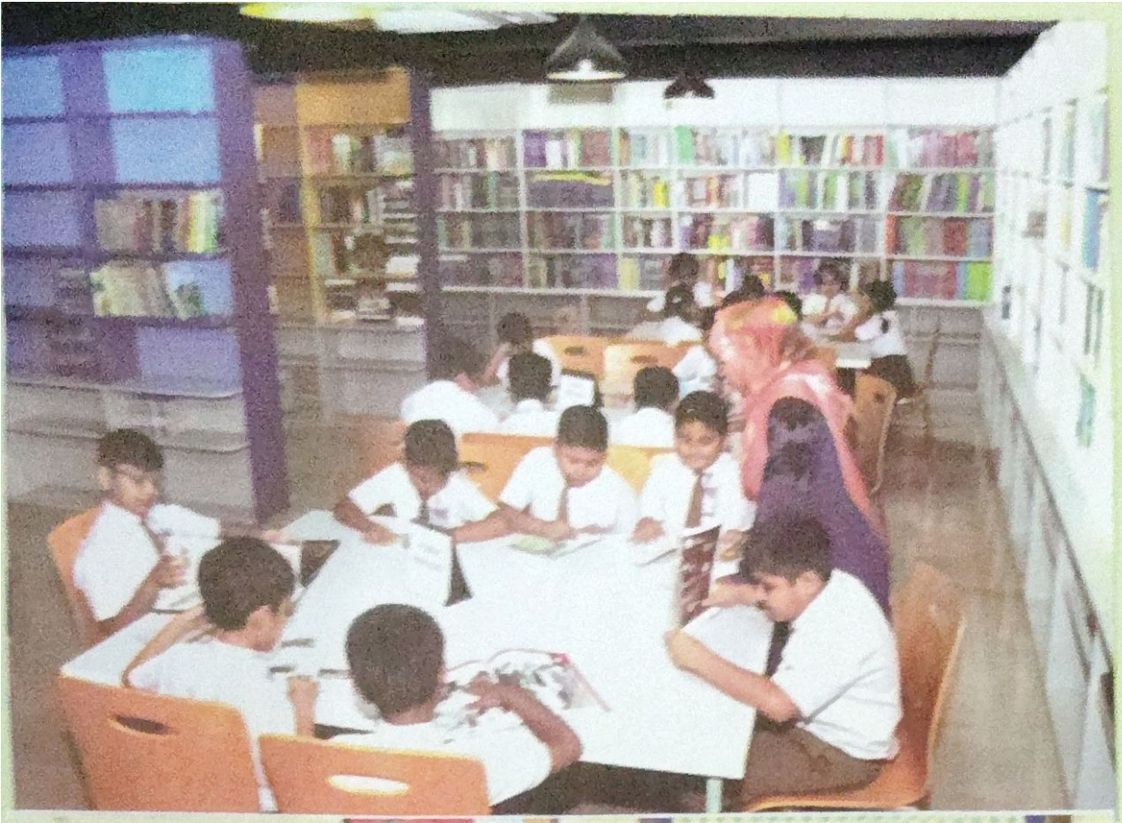

स्कूल की आधारिक संरचना का विवरण :-

पुस्तकालय :-

इस विद्यालय में दो पुस्तकालय हैं। जिसमें बहुत सारी पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में बैठकर शांति से विद्यार्थी पुस्तकें पढ़ते हैं तथा अपने ज्ञान को बढ़ाते हैं।

कक्षाएँ :-

इस विद्यालय की कक्षाएँ बड़ी तथा सुविधाजनक हैं। कक्षा में बैठने के लिए पर्याप्त बेंच तथा पढ़ाई के लिए श्यामपट्ट भी हैं। कक्षाओं में बिजली की उचित व्यवस्था भी हैं। कक्षा में मेज-कुर्सी भी हैं।

प्रधानाचार्य कक्ष :-

प्रधानाचार्य कक्ष को भी सुव्यवस्थित करके रखा गया हैं। स्कूल की सभी गतिविधियों से संबंधित ट्रॉफी तथा मैडल इसी कक्ष में रखे गए हैं।

पीने के पानी की सुविधा :-

स्कूल में पीने के पानी की भी उचित व्यवस्था की गई है। यहाँ पर वाटर कूलर लगाए गए हैं।

शौचालय :-

विद्यालय में शौचालय की भी उचित व्यवस्था हैं। बच्चों और शिक्षकों के लिए अलग-अलग शौचालय हैं।

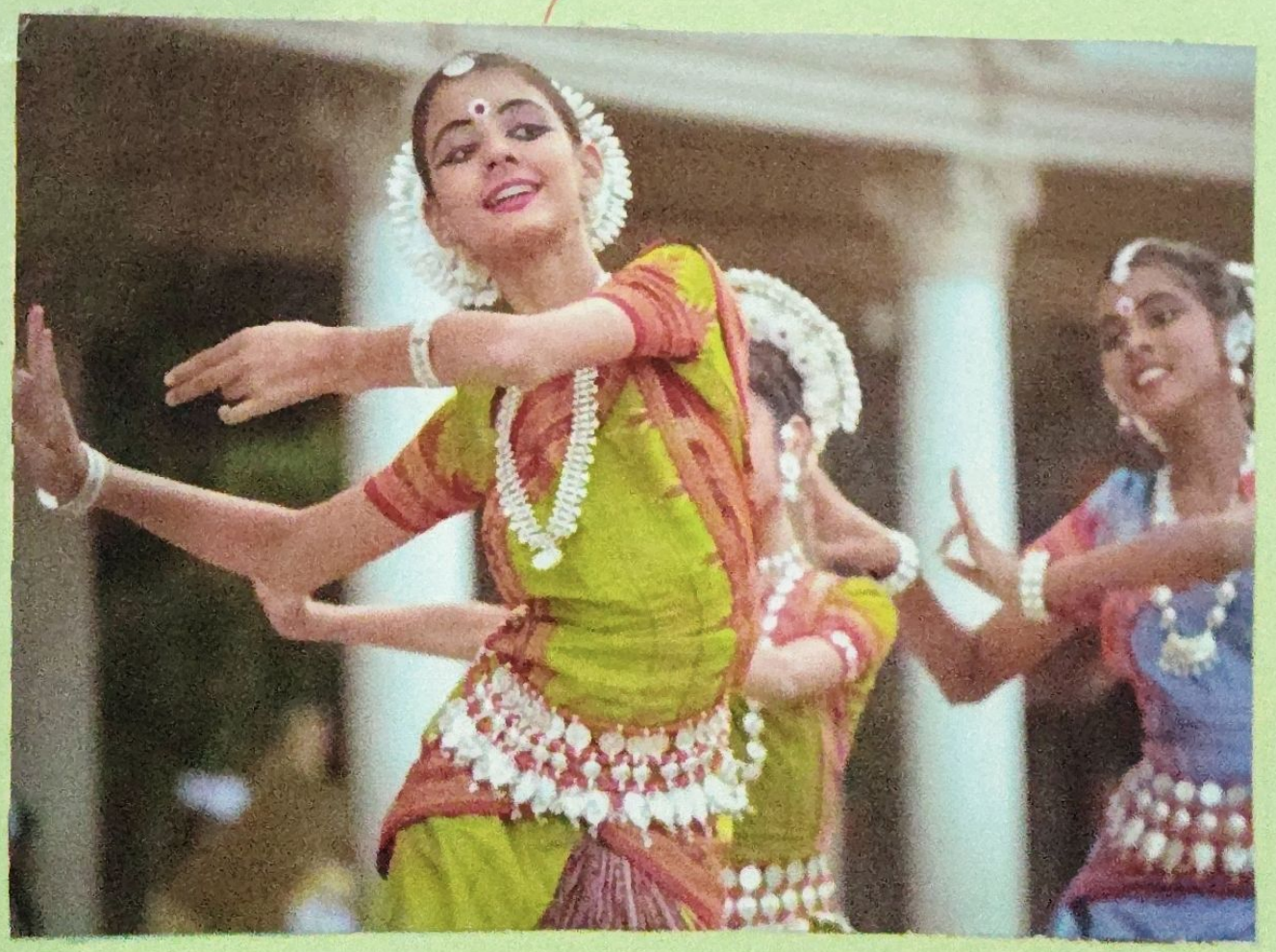

सुबह की सभा :-

सुबह की सभा का अर्थ है - प्रातः काल सभी विद्यार्थियों तथा स्टाफ का एकत्र होना। यह स्कूल की प्रथम क्रिया होती है। जो समूचे स्कूल को उत्साह प्रदान करती है।

प्रातः काल की सभा में विद्यालय का वातावरण कोलाहलपूर्ण था। सभी विद्यार्थी अध्यापकों को नमस्ते कर रहे थें। विद्यार्थी अपनी - अपनी कतारों में स्वयं ही खड़े हो जाते थे। अध्यापकों को बच्चों को बार-बार समझाना नहीं पड़ता था। सभी विद्यार्थी बहुत अनुशासित थे। सभी अध्यापकों में एकता तथा सहनशीलता थी। प्रार्थना - सभा में प्रधानाचार्य तथा स्टाफ बच्चों को अन्य जानकारियाँ भी देते थें।

प्रार्थना - सभा की सामान्य गतिविधियाँ :-

- प्रार्थना ।
- राष्ट्रगान ।
- नारे ।
- दिन का सुविचार ।
- सामान्य ज्ञान प्रश्न - उत्तर ।
- विद्यार्थी उपस्थिति ।
- व्यायाम स्कूल वर्दी की जाँच ।
- विद्यार्थियों की समस्याओं को सुलझाना ।

मिड - डे मिल

मिड - डे - मील स्कीम एक सरकारी योजना है, जिसके अंतर्गत सरकार बच्चो के पोषण को ध्यान में रखते हुए खाना प्रदान करती है।

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य यही था कि इसका प्रलोभन देकर ज्यादा - से ज्यादा बच्चो को स्कूल में बुलाए ताकि वे शिक्षा ग्रहण कर सके। क्योंकि सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले ज्यादातर बच्चे गरीब परिवारो से ही संबंध रखते हैं।

इस योजना के अंतर्गत बच्चो को प्रतिदिन पौष्टिक आहार दिया जाता है ताकि उनका मानसिक तथा शारीरिक विकास हो सके। मिड - डे - मील में अनेक प्रकार के भोजन बच्चों को दिए जाते हैं जिसमें पौष्टिक आहार भरपूर मात्रा में उपलब्ध होता है।

पौष्टिक भोजन मिड - डे - मील में दिया जाता है जो निम्नलिखित प्रकार का होता है।

खिचड़ी पुलाव।
नमकीन चावल।
दाल - चावल, कड़ी - चावल।
दलिया इत्यादि।

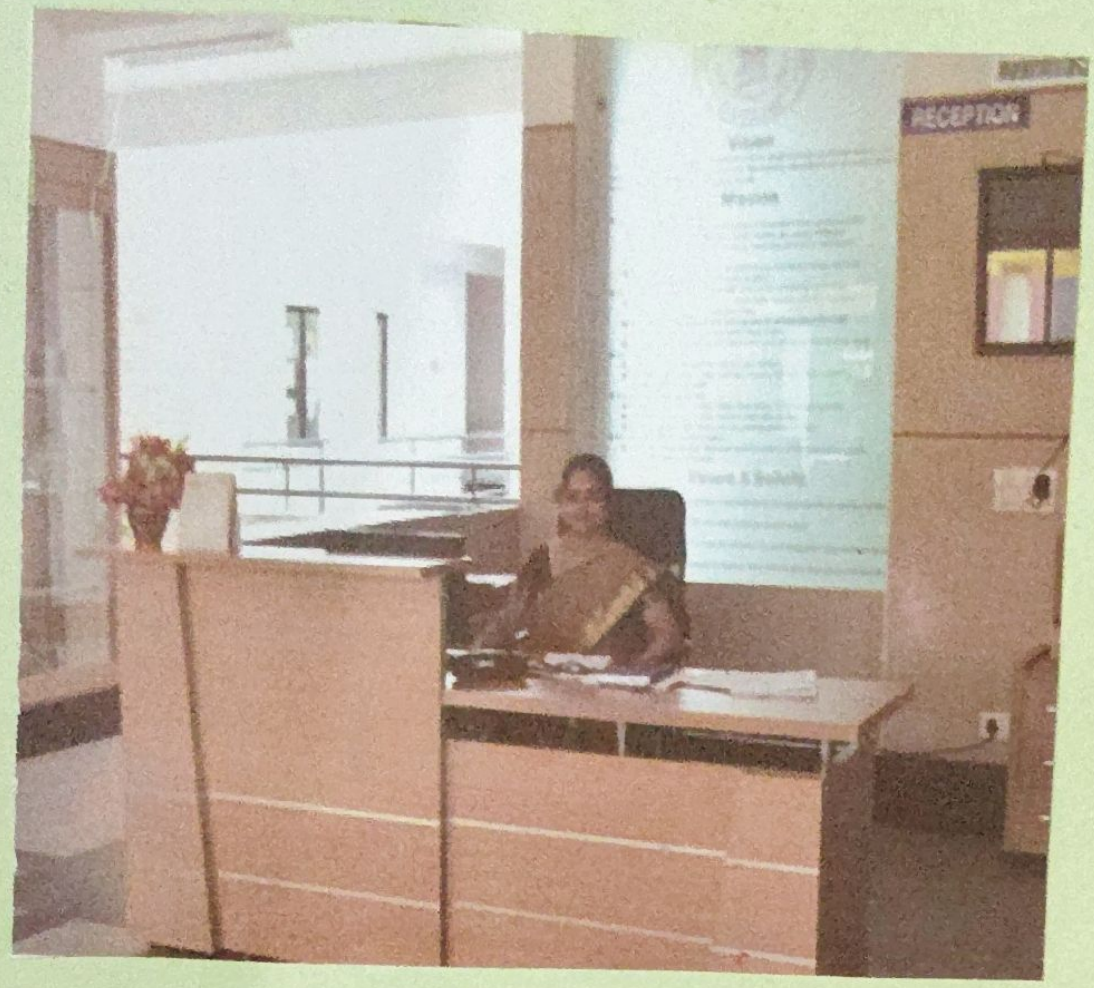

RECEPTION

STUDENT NOTICE BOARD
CLASS RULES
No Bullying
Do Your Best
Procrastination
WELL-DRESSED CYBERBULLIES

समय - सारणी :-

समय - सारणी एक दर्पण के समान है। जिस प्रकार दर्पण हमारे वास्तविक रूप को प्रदर्शित करता है, उसी प्रकार समय - सारणी विद्यालय के समूचे कार्य संचालन को प्रदर्शित करती है। समय - सारणी एक साधन है, जिसके द्वारा विद्यालय अधिकारियों के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं। समय - सारणी प्रधानाचार्य - कक्ष, मुख्याध्यापक कक्ष, नोटिस बोर्ड या कक्षा में लगाई जाती है।

Objectives Of Time- Table :-

शिक्षण गतिविधियों का परिचायक, परीक्षण में सहायक, विषय विभाजन, शिक्षक कार्य का विभाजन, नियमितता उत्पन्न करना, समय का सदुपयोग।

समय - सारणी की आवश्यकता :-

यह विद्यालय को सुव्यवस्थित व सुनियोजित करती है।
अध्यापकों की कार्यकुशलता को बढ़ाती है।

University Roll No. ....

- काम का उचित वितरण ।
- विद्यालय में अनुशासन ।
- समय - सदुपयोग ।
- प्रशासन में सहायक ।
- वांछनीय आदर्शों का विकास ।
- विद्यालय परिवार को कार्यशील बनाना ।

Time-Table Of School.

→ **Summer Session**

8:00 AM TO 2:30 PM

→ **Winter Session**

9:30 AM TO 3:30 PM

→ **Exams Session**

8:00 AM TO 12:00 PM

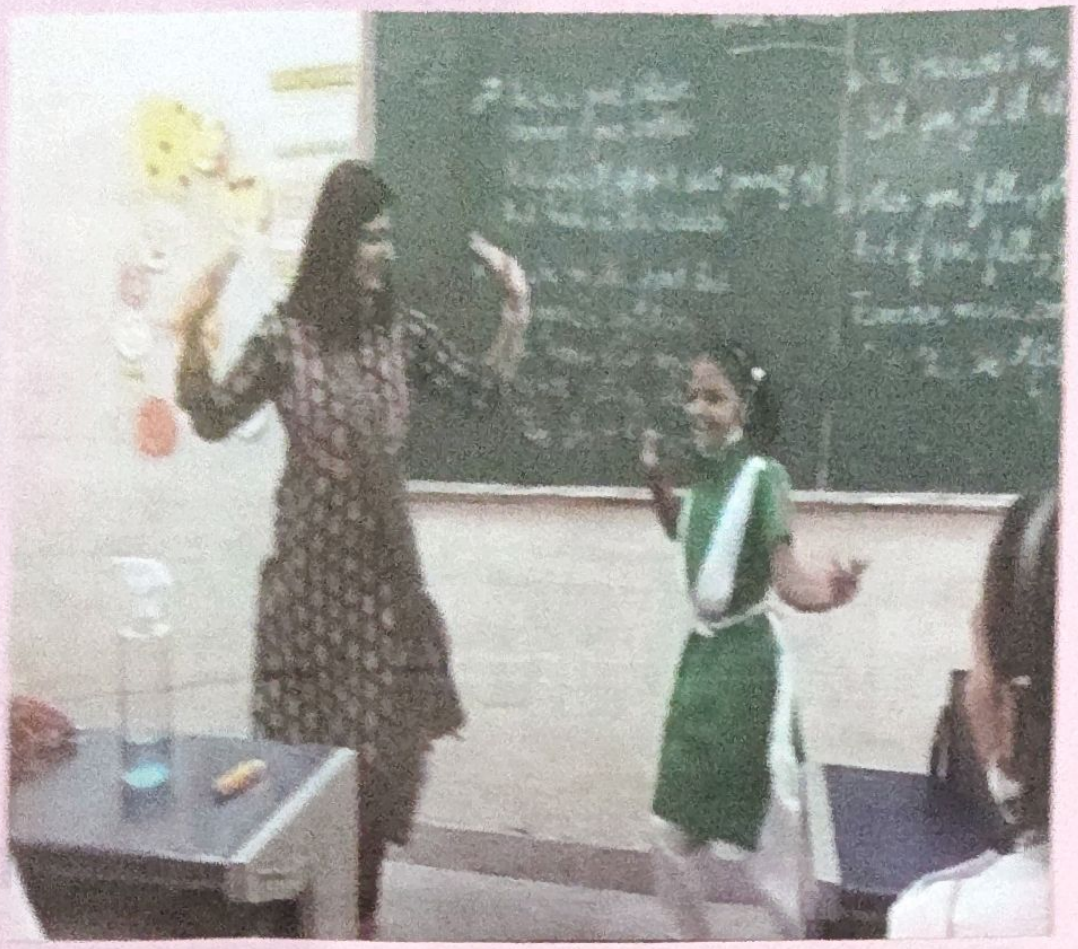

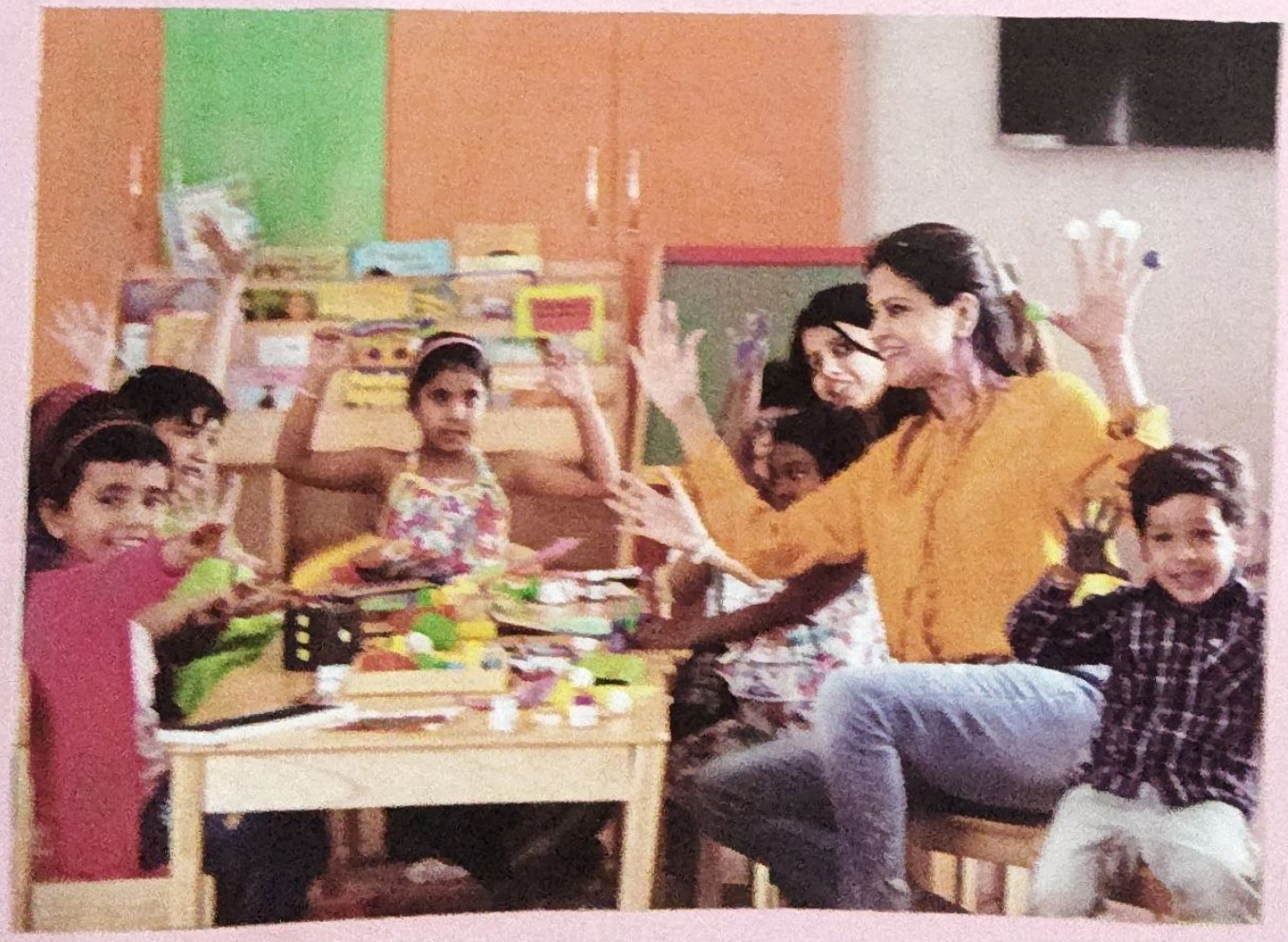

Teacher - Student Relation :-

• **Teacher** ⇒ अध्यापक एक ऐसा व्यक्ति है जो बच्चों को शिक्षा प्रदान करता है। बच्चों को जीवन में सफल बनाने के लिए मार्गदर्शन करता है, उनकी समस्याओं का समाधान करता है।

• **Student** ⇒ विद्यार्थी शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - विद्या + अर्थी। इसका अर्थ है - शिक्षा को ग्रहण करना।

→ **विद्यार्थी और शिक्षक के संबंध** ⇒

» अध्यापक का स्वभाव प्रेमपूर्ण होना चाहिए और सहनशील भी।

» विद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं को बातों से अच्छी तरह से समायोजित होना चाहिए।

→ **अध्यापक तथा विद्यार्थियों के समान उद्देश्य** ⇒

» ज्ञान में वृद्धि करना।
» स्मरण शक्ति को बढ़ाना।
» विश्वसनीय बनना।
» प्रभावशील बनना।
» स्पष्टवादी बनना।

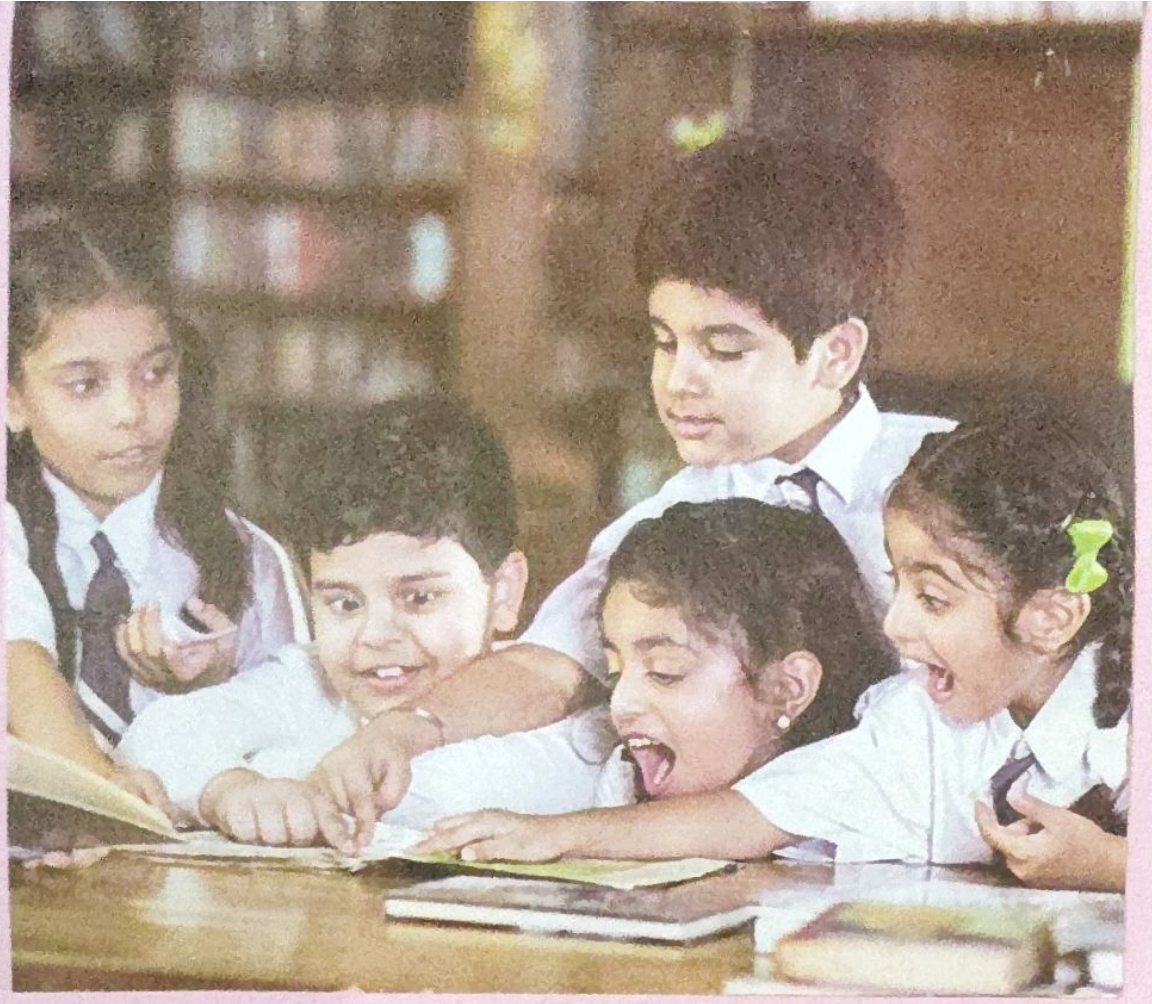

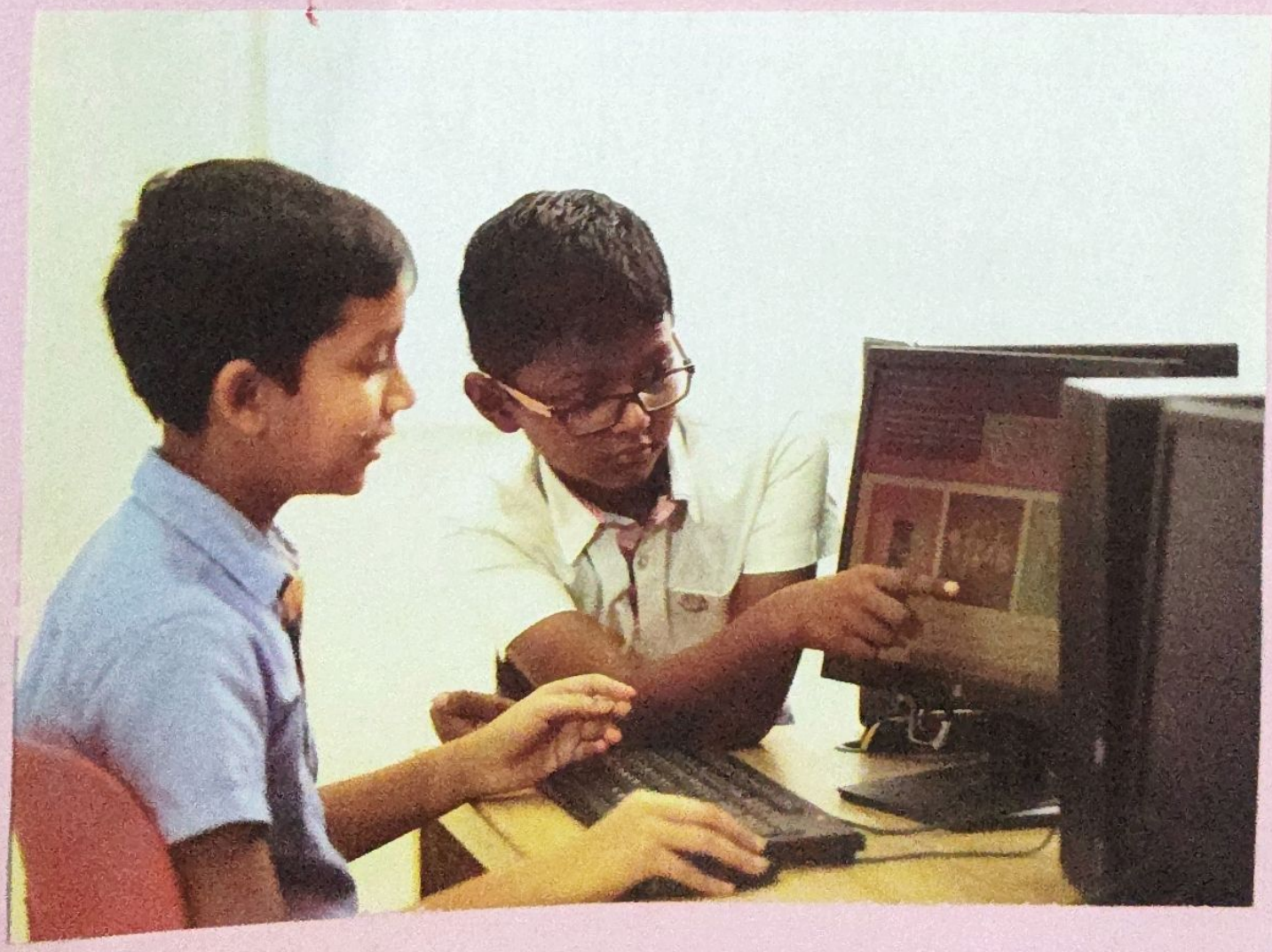

विद्यार्थी का विद्यार्थी से सम्बन्ध :

विद्यालय में विद्यार्थी एक-दूसरे के साथ मिल जुलकर रहना पसंद करते थे। विद्यार्थी आपस में कभी भी नहीं लड़ते थे। बच्चों में एकता की भावना थी। सभी बच्चे एक-दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते थे। आपस में भी एक-दूसरे को सम्मान देते थे।

सभी बच्चों में प्रेम की भावना थी। सभी बच्चे एक-साथ बैठकर खाना खाते थे तथा सभी बच्चे आपस में एकसाथ मिलकर खेलते थे। कुछ बच्चे चुपचाप बैठे रहते थे तथा कुछ आवश्यकता से अधिक बोलते थे। सभी बच्चे अध्यापकों का कहना मानते थे।

सभी बच्चे आपस में कक्षा में बैठकर शांतिपूर्वक पढ़ते थे। जिन बच्चों को कुछ समझ नहीं आता था तो वह अपने सहयोगी बच्चे से पूछ लेता था तथा उसको भी पता नहीं होता था तो वह अध्यापक से पूछ लेता था।

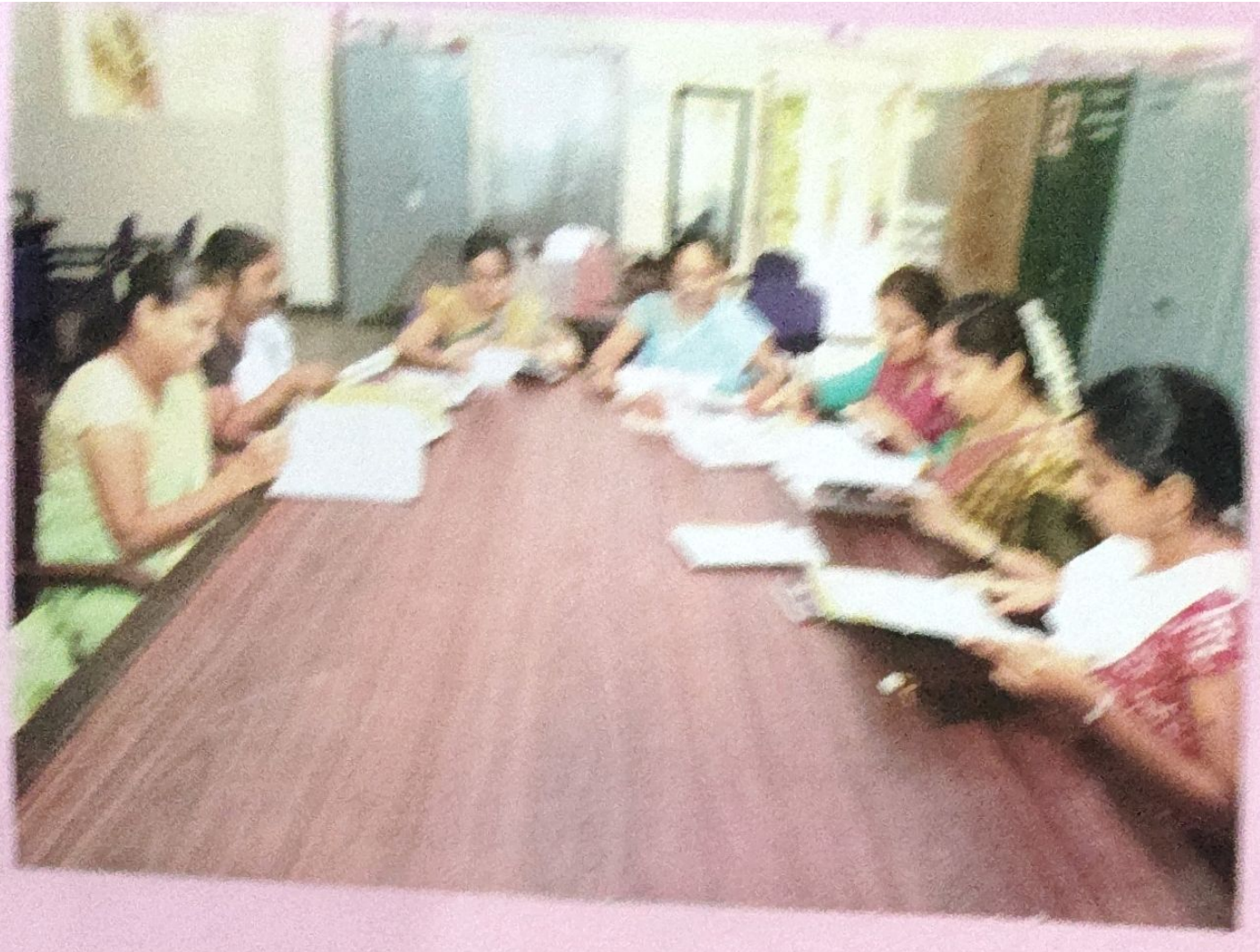

University Roll No. .... Page No: 9

Staff Room :-

अध्यापकों के बैठने वाला कमरा एक अच्छी जगह पर था तथा अच्छी प्रकार से व्यवस्थित था। अध्यापकों की आवाज कक्षा तक नहीं पहुंचती थी। सभी अध्यापकों का आपस में संबंध अच्छा था। सभी अध्यापकों में एकता थी।

सभी अध्यापक स्टाफ रूम में बैठकर बच्चों की कापी चैक करते थे तथा आराम करते थे। कुछ अध्यापक तथा अध्यापिका चाय पीती रहती थी तथा कुछ पुस्तकें पढ़ती रहती थीं। सभी अध्यापक अपने खाली घंटी में स्टाफ रूम में बैठकर आराम करते थे ताकि अगली घंटी में बच्चों को आराम से पढ़ा सकें।

स्टाफ रूम में सोफा, कुर्सी तथा मेज अच्छी तरह से व्यवस्थित रखी हुई रहती थी। स्टाफ रूम में सफाई की व्यवस्था भी पूरी रहती थी। सभी अध्यापक समय पर अपना कार्य पूरे करते थे तथा सभी अध्यापकों का आपस में सम्मानपूर्वक व्यवहार था।

प्रशिक्षु शिक्षक होने का अनुभव :-

अपनी बी. एड के इस सेमेस्टर में एक प्रशिक्षु शिक्षक के तौर पर मेरा अनुभव काफ़ी ही अच्छा, यादगार व चुनौतीपूर्ण रहा। इन अनुभवों से मैंने बहुत कुछ सीखा जो हमेशा मेरे साथ रहेगा। मैंने अपने आप को सहज क्षेत्र से निकल एक शिक्षक के रूप में पाया।

सबसे पहले मैंने यह सीखा कि जब हम अपने काम को एक योजना में करते हैं तो यह कितना आसान हो जाता है। जिससे हम अपनी कक्षा में किसी पाठ - योजना को सरल और प्रभावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।

मैंने स्कूल के स्टाफ से बहुत- कुछ सीखा तथा साथ ही साथ रोजाना बच्चों से बातचीत कर मैंने उनसे भी बहुत कुछ सीखा। मैंने अपनी खामियों को सुधारकर मैंने एक अच्छा शिक्षक बनने का प्रयास किया। मुझे लगता है कि विद्यार्थियों के साथ एक अच्छा संबंध सीखने - सिखाने की इस प्रक्रिया को और भी आसान कर देता है।

स्कूल में शिक्षक का व्यवहार कैसा होना चाहिए, उसकी क्या - क्या जिम्मेदारियाँ होनी चाहिए। एक अच्छा शिक्षक बहुत ही संतुलित होता है। यह मैंने सीखा।

विद्यालय का वातावरण :-

सामाजिक जीवन ही मानव संबंधो का अध्यन्न हैं। सामाजिक अध्यन्न का क्षेत्र बहुत ही विशाल हैं। यह एक ऐसा विषय है जिसमे विद्यार्थियों का विकास होता हैं और साथ-साथ बच्चों को भी नये अनुभव मिलते हैं।

बच्चों को पढाते समय मैं भी बहुत खुश था। अध्यापकों ने हमारे लिए अच्छी व्यवस्था कर रखी थी। उन्होनें हमे स्टाफ रूम में बैठने की अच्छी व्यवस्था कर रखी थी।

स्कूल की छुट्टी होने के बाद सभी विद्यार्थी लाइन से बाहर निकलते थे। पहले छोटे बच्चे जाते थे तथा उसके बाद बड़े बच्चे जाते थे और फिर सब लाइन से बाहर निकलते थे। विद्यालय के सभी अध्यापक भी रजिस्टर में हस्ताक्षर करके जाते थे। हम भी हस्ताक्षर करके विद्यालय से निकलते थे। विद्यालय के प्रांगण मे बहुत से पौधे लगे हुए थे। कुछ पौधों पर फूल भी थे। प्रधानाचार्य जी का कमरा बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया है। विद्यालय में सफाई भी अच्छी थी। सभी अध्यापक तथा विद्यार्थी बहुत मेहनती थे। विद्यालय के सभी अध्यापकों ने मेरी हर संभव मदद भी की थी।

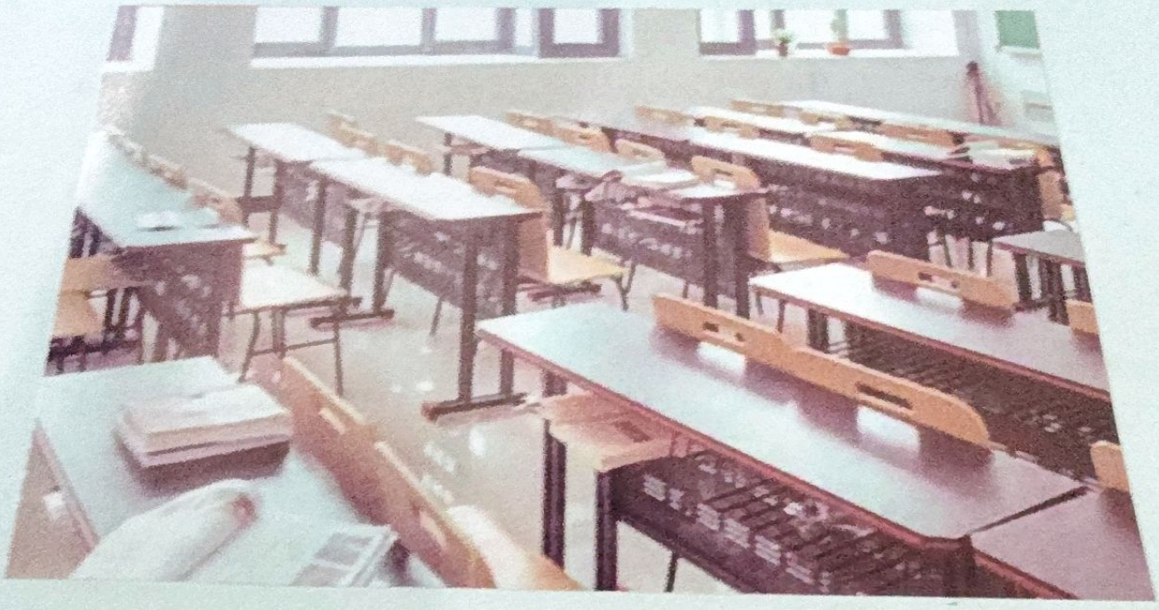

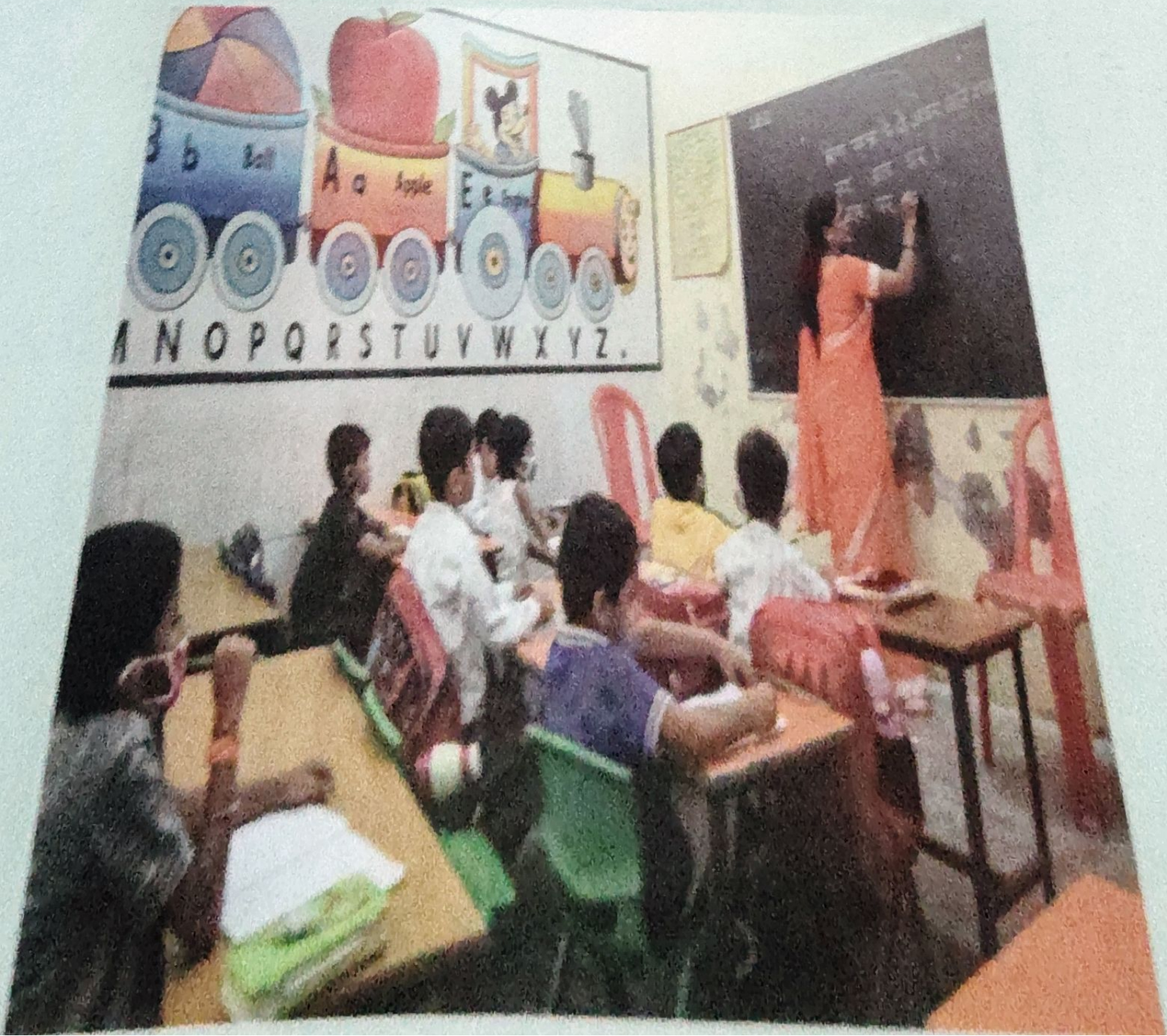

b Ball
A a Apple
N O P Q R S T U V W X Y Z .

कक्षा - कक्ष में सीटों का प्रबन्ध ⇒

कक्षा - कक्ष के अंतर्गत सीटों का प्रबन्ध उचित ढंग से किया गया था।
" प्रत्येक डेस्क की लंबाई - चौडाई उचित थी।
" प्रत्येक डेस्क की पंक्ति के बीच अंतर छोड़ा गया।
" कक्षा - कक्ष में डेस्क की पंक्ति भी उचित थी।

मैंने पाठ योजना बनाकर बच्चों को पढ़ाया ताकि सभी बच्चे लाभान्वित हो सके। अध्यापक ऐसा वातावरण कक्षा में तैयार करता है जिससे सभी बच्चे एक साथ सहयोगात्मक ढंग से पेश आए व विशिष्ट स्थिति के बालक अपने आप को पीड़ित व नजर-अंदाज ना समझे और उनका भी समान समावेश हो सकें।

अध्यापक की भूमिका :⇒

बालक के अन्दर विद्यालय की तत्परता का होना अति आवश्यक है। यह एक ऐसी अवस्था है जिसमें बालक विद्यालय के कक्षा - कक्ष में अनुशासन में रहता है। इसमे अध्यापक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्यापक विद्यार्थी को सही समझ तथा ज्ञान देता है ताकि उनका भविष्य सही बन सकें।

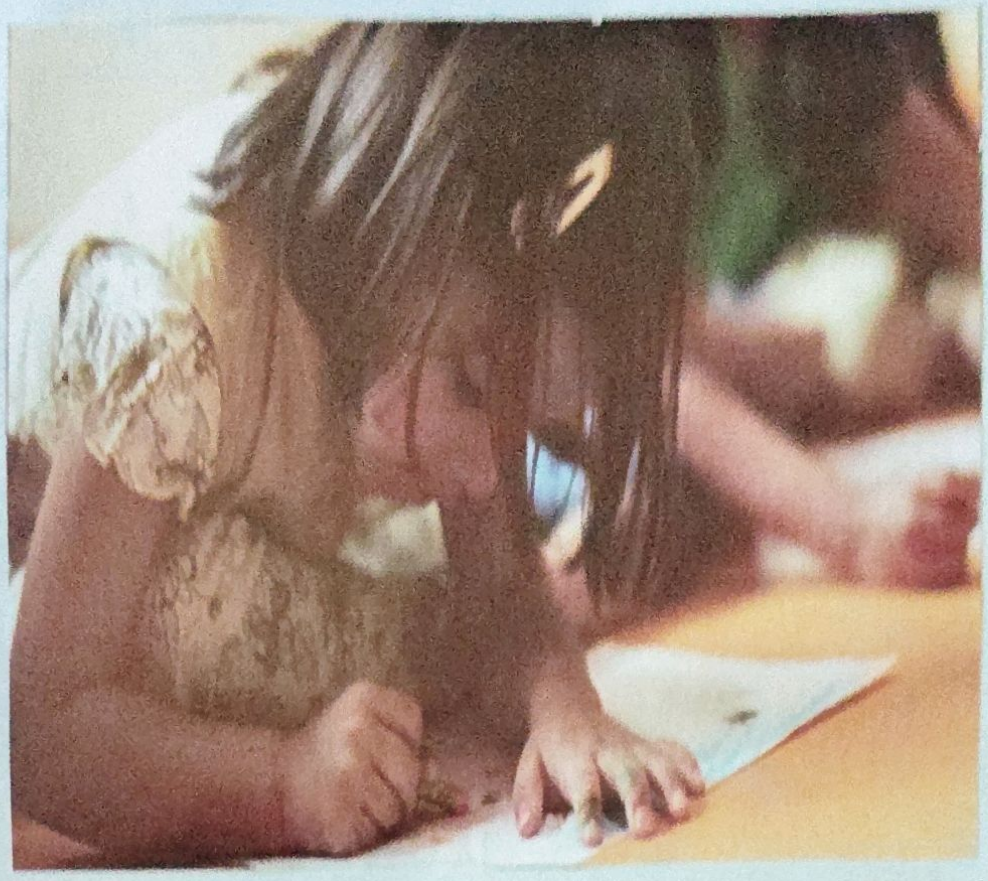

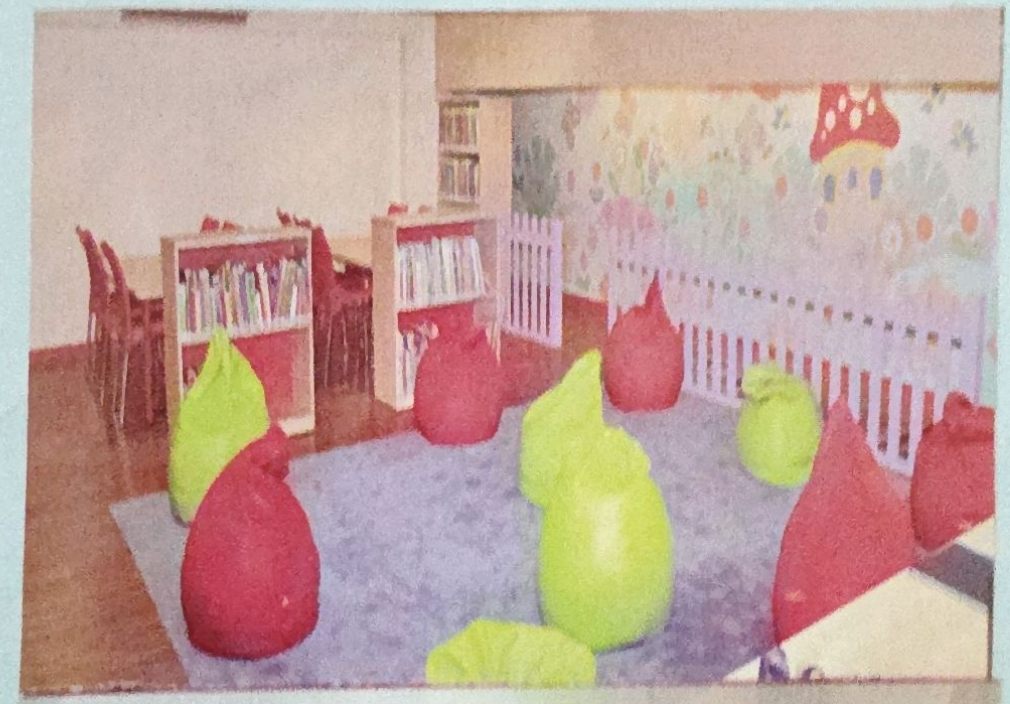

सतत् और व्यापक मूल्यांकन :-

सतत् और व्यापक मूल्यांकन वर्ष २००९ मे भारत में शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत लाया गया। सतत् और व्यापक मूल्यांकन का आशय मूल्यांकन की उस प्रणाली के बारे में है जिसमे विद्यार्थियों के विकास के सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जाता है। सतत और व्यापक मूल्यांकन विद्यार्थियों के अध्ययन और शिक्षकों की शिक्षा प्रणाली को सीधे प्रभावित करता है। इसके द्वारा ऐसे प्रमाण एकत्र किये जाते हैं जिससे यह प्रमाणित किया जा सके कि विद्यार्थियों का विकास सही दिशा में हो रहा है।

लक्ष्य :-

i) सी.सी.ई. का मुख्य उद्देश्य बच्चो की विद्यालय में उपस्थिति के दौरान उसके हर पहलू का मूल्यांकन करना है।

ii) सी.सी.ई. का उद्देश्य बच्चों के तनाव को कम करना है।

iii) मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाना।

iv) रचनात्मक शिक्षण के लिए शिक्षक को स्थान प्रदान करना।

v) निदान और उपचार के साधन प्रदान करना।

vi) वृहद् कौशल वाले विद्यार्थियों का निर्माण करना।

उद्देश्य :→

i) मूल्यांकन प्रक्रिया को शिक्षण - अधिगम की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाना।
ii) विद्यार्थियों की नियमित तथा बहुआयामी जाँच।
iii) विषय तथा पाठ्यक्रम पर आधारित सामूहिक कार्य।
iv) शैक्षिक तथा सह - शैक्षिक क्षेत्र में संतुलन।
v) विद्यार्थियों में अच्छी आदतें व सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा।
vi) आत्म - मूल्यांकन के लिए विद्यार्थियों को अवसर देना।

विशेषताएँ :→

→ सी.सी.ई. का 'सतत' पहलू मूल्यांकन के 'निरंतर' और 'आवधिक' पहलू का ध्यान रखता है।
→ सी.सी.ई. का व्यापक घटक बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के मूल्यांकन का ध्यान रखता है।
→ इसमे विद्यार्थियों के शैक्षिक के साथ - साथ सह - शैक्षिक क्षेत्र भी शामिल हैं। शैक्षिक मे पाठ्यक्रम तथा सह - शैक्षिक मे जीवन - कौशल, सह पाठ्यक्रम संबंधी क्षेत्र, दृष्टिकोण शामिल है।
→ सह शैक्षिक क्षेत्रों में आकलन निर्धारित मापदंड के आधार पर बहुविध तकनीकों का उपयोग करते किया जाता है।
→ जीवन - कौशलों का आकलन, आकलन के सूचकों व जाँच सूचियों के आधार पर किया जाता हैं।

University Roll No. .... Page No: 15

कार्य :→

→ सी.सी.ई. शिक्षक को प्रभावी शिक्षण की रणनीति को व्यवस्थित करने मे सहायता करता है।

→ सतत मूल्यांकन कमजोरियों का निदान करने मे सहायता करता है व शिक्षक को कुछ व्यक्तिगत शिक्षण की जाँच की अनुमति देता है।

→ सतत मूल्यांकन के माध्यम से छात्र अपनी शक्ति व कमजोरियों को जान सकते हैं।

→ सतत व व्यापक मूल्यांकन अभिरुचियों व प्रवृत्ति वाले दोनों क्षेत्रों की पहचान करता है।

लाभ :→

→ यह शिक्षक को प्रभावकारी कार्यनीतियाँ तय करने मे मदद करता है।

→ सतत और व्यापक मूल्यांकन विद्यार्थी की प्रगति की गति और मात्रा को नियंत्रित रूप से आंकने मे सहायता करता है।

→ इसके द्वारा छात्रों मे आदतें विकसित की जा सकती हैं, उन्हे सही समय पर गलतियाँ सुधारने का सही अवसर मिलता है।

→ यह शिक्षक को तत्काल फीडबैक उपलब्ध करवाता है जिससे यह फायदा मिलता है कि समूचे पाठ को कक्षा मे फिर से पढ़ाने की आवश्यकता है या नहीं।

FRUITS
VEGETABLES
PARTS OF THE BODY
COLOURS

→ यह शैक्षिक और सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों में विद्यार्थियों की प्रगति के बारे में फीडबैक प्रदान करता है।

विद्यालय आधारित सी.सी.ई. की विशेषताएँ :-

→ यह पारंपरिक प्रणाली की तुलना में प्रभावशाली, अधिक व्यापक और सतत है।

→ इसका प्राथमिक उद्देश्य व्यवस्थित अधिगम और विकास में शिक्षार्थियों की सहायता करता है।

→ यह भविष्य के जिम्मेदार नागरिकों के रूप में शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है।

→ यह अधिक पारदर्शी, अत्याधुनिक है और शिक्षार्थियों, शिक्षकों तथा माता-पिता के बीच सहयोग के लिए अधिक अवसर प्रदान करती है।

उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्य-सामग्री एवं उससे प्राप्त जानकारी विभिन्न पद्धतियों के अधिगम परिस्थितियों के माध्यम से आवश्यक है। छात्रों को उनकी परिस्थिति से अवगत कराने के बाद मूल्यांकन होगा। और यदि वांछित ज्ञान का स्तर सही ढंग से नहीं हुआ है तो इसका अर्थ होगा कि विद्यार्थी असफल रहें।

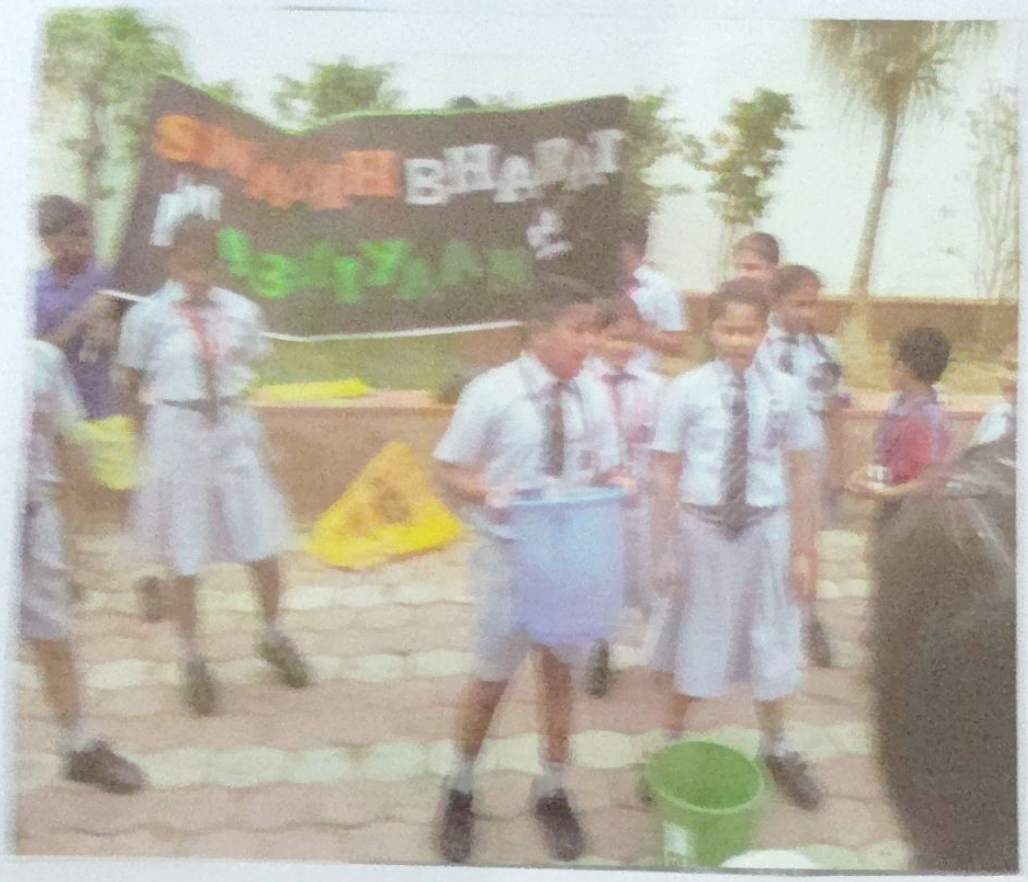

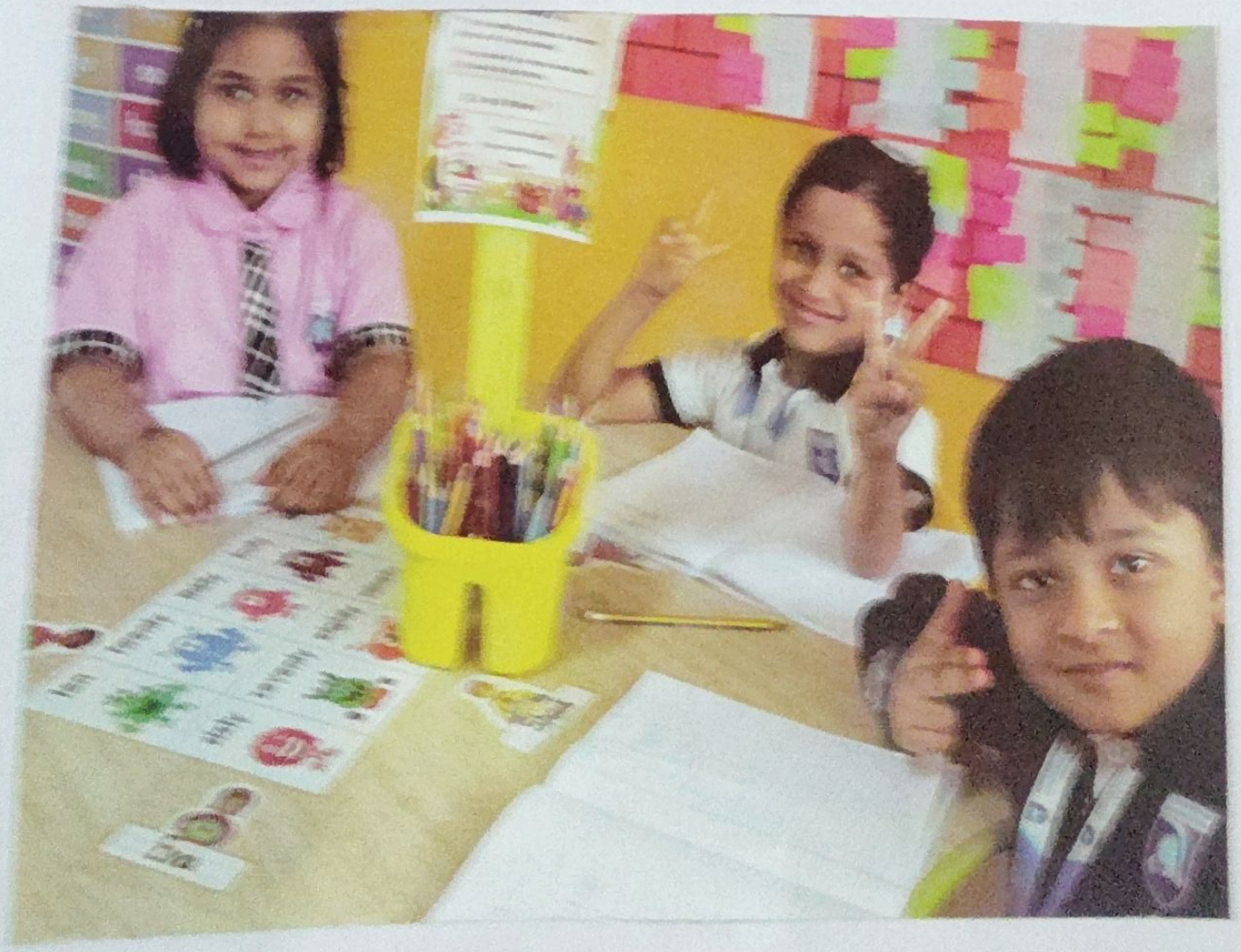

मूल्यांकन :-

अधिगम के मूल्यांकन को एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है। जिससे कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति द्वारा प्रसंस्कृत ज्ञान, दृष्टिकोण या कौशल का विवरण व परिमाण निर्धारित करने का प्रयास करता है। इस प्रकार के अधिगम में शिक्षकों के निर्देश सर्वोपरि है और छात्रों की इन परिस्थितियों में मूल्यांकन प्रक्रिया की रूपरेखा या कार्यान्वयन में बहुत कम भागीदारी है।

→ मूल्यांकन मुख्यतः दो प्रकार का होता है -

निर्माणात्मक मूल्यांकन ⇒ निर्माणात्मक मूल्यांकन बच्चों के अधिगम को नापता है। यह ठीक समय पर आवश्यकता प्राप्त तथा शक्ति के लिए भी प्रेरित करता है। प्रत्येक इकाई के शिक्षण उपरान्त निर्माणात्मक परीक्षण किया जाता है।

विषय- वस्तु का विश्लेषण :- इस मूल्यांकन विधि के इस सोपान के अंतर्गत अधिगम इकाई के अवयवों को विषय- वस्तु से जोड़ा जाता है।

छात्रों के अवयवों की विशिष्टता :- शिक्षक द्वारा नई विषय - वस्तु का विश्लेषण करने के लिए

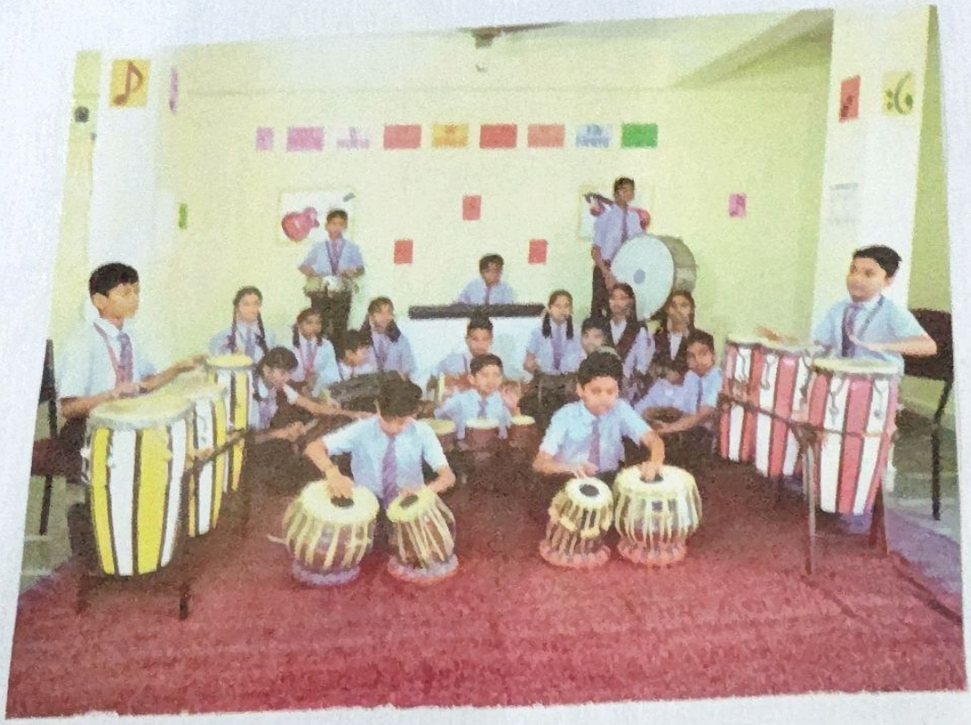

निर्माणात्मक मूल्यांकन के दूसरे सोपान से मूल - विषय वस्तु से संबंधित छात्रों के व्यवहारों समझा जाता है।

संकलनात्मक मूल्यांकन :-

संकलनात्मक मूल्यांकन का संबंध पाठ्यक्रम के परिणाम के मापन से है। पाठ्यक्रम की रचना विशेष लक्ष्यों के आधार पर की जाती है। संकलनात्मक मूल्यांकन का लक्ष्य बच्चों के पाठ्यक्रम में सुधार के परिणामस्वरूप उनके मूल्यांकन का सुधार करना है।

बच्चों में कैसे परिवर्तन होता है यह इससे अधिक संबंधित है। इसका मुख्य लाभ यह भी है कि परिवर्तन पूरा हो चुका है। शेष बची कमियों को दूर किया जा सकता है।

लाभ :→

» मूल्यांकन से अभिभावकों और समाज को संस्था की प्रगति व गतिविधियों की पूरी जानकारी मिलती है।

» अभिभावकों को मूल्यांकन से अपने बच्चों के विकास और सहयोगी क्रियाओं का पता चलता है।

» मूल्यांकन से अभिभावकों व समाज को संस्था के बारे में पता चलता है यह भी पता चलता है कि विद्यार्थी समाज तथा राष्ट्र के प्रति कितने समर्पित हैं। यह मूल्यांकन ही है।

MY TREE

परीक्षा :-

मूल्यांकन में बच्चों की सभी प्रकार की परीक्षा होती है। उन परीक्षाओं से ही बच्चों की योग्यता के बारे में पता लगता है।

- निबंधात्मक परीक्षा।
- बहुविकल्पीय प्रश्न परीक्षा।
- वाक्यपूर्ति प्रश्न परीक्षा।
- वस्तुनिष्ठ प्रश्न परीक्षा।
- मौखिक परीक्षा इत्यादि।

परीक्षा के आधार पर ही बच्चों के ज्ञान की परख होती है कि बच्चे ने कितना ज्ञान उर्जित किया है तथा बच्चे के अंदर कितना कौशल विकसित हो रहा है। इन सभी चीजों का पता लगाने के लिए परीक्षा होती है तथा परीक्षा के बाद बच्चों अंक या ग्रेड दिये जाते हैं।

Yadav